बीए–हिन्दी–प्रतिष्ठा–प्रथम वर्ष

तुलसीदास के जीवन आदर्श रूप रामभक्ति

– डॉ॰ मुन्ना साह
जे.के. कॉलेज, बिरौल

तुलसीदास के जीवन आदर्श रूप राम 'सत्, चित्, व्यापक आनन्दरूप परब्रह्म हैं। वे अपने भक्तों के बीच लीला करने के लिए अव्यक्त से व्यक्त रूप में प्रकट हुए हैं। सिद्ध गणों की रक्षा करने के लिए ही परमात्मा स्वरूप राम ने गुणसम्पन्न मनुष्य का शरीर धारण किया है'।[1] 'राम को गुरु, पिता, माता, भाई, पति और देवता सबकुछ जानकर जो सेवा में दृढ़ रहता हो, राम का गुण गाते समय जिसका शरीर पुलकित हो जाए, वाणी गदगद हो जाए, नेत्रों से प्रेमाश्रु बहने लगें और काम, मद और दंभ जिसमें न हो राम सदा उसके वश में रहते हैं'।[2] अर्थात् उसे परम आनंद की प्राप्ति होती है। तुलसी की भक्ति में जीवन की समस्त स्थितियाँ मौजूद हैं। जो उत्तम समाज के लिए आवश्यक है। ''ईश्वर के प्रति श्रद्धावान् होना, प्रेम करना और विश्वास रखना किसी भी भक्त के लिए जरूरी होता है। श्रद्धा बड़ों के प्रति पैदा होती है, इसलिए भक्त सदैव आलम्बन से स्वयं को छोटा मानता है।''[3] तुलसी भी राम के संदर्भ में लिखते हैं –

---

[1] ''सच्चिदव्यापकानंद परब्रह्म–पद विग्रह–व्यक्त लीलावतारी।
विकल ब्रह्मादि, सुर, सिद्ध, संकोचवश, विमल गुण–गेह नर–देह–धारी।।'' विनय–पत्रिका, छं. 43.1.

[2] ''गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा।।
मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा।।
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें।।'' श्रीरामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, दो. 15.5–6.

[3] तुलसी शास्त्र एवं अवधारणाएं, प्रो. हौसिला प्रसाद सिंह, संजय प्रकाशन, दिल्ली–2, संस्करण : 2006, पृ. 3.

''रामसों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो।

राम सो खरो है कौन, मोसों कौन खोटो।।''[4]

इस तरह वे राम को बड़ा और स्वयं को छोटा मानकर अपनी दास्य भक्ति भावना को व्यक्त करते हैं। दास्य भक्ति भावना तुलसी साहित्य में प्रधान रूप में है। साथ ही सख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य-भक्तिभाव भी दिखाई देता है।

दास्य भक्ति

''तुलसीदास दास्य भाव के भक्त कवि हैं, शेष भाव उसकी निरन्तरता को बनाए रखने में सहायक हैं। शरणागति से गुजरते हुए दास्य भावना को भक्त इसी कोटि की भक्ति में विस्तार देता है। इस भक्ति में ईश्वर और भक्त की अपनी सीमाएं निश्चित रहती हैं।''[5] भक्त भगवान के प्रति अनन्य भाव रखता है। इसका प्रतिमान यह है -

''एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास।

एक राम घन स्याम हित चातक तुलसीदास।''[6]

दास्य भाव के साथ की गई भक्ति में 'भगवान के अपनाने मात्र से मनुष्य बड़ा हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे वामन भगवान के हाथ का दण्ड उनके साथ ही बढ़कर

---

[4] विनय पत्रिका, छं. 72.

[5] तुलसी शास्त्र एवं अवधारणाएं, प्रो. हौसिला प्रसाद सिंह, संजय प्रकाशन, दिल्ली-2, संस्करण : 2006, पृ. 11.

[6] दोहावली, दो. 277.

अखिल ब्रह्माण्ड तक पहुंच गया।'[7] तुलसी के लिए दास्यभाव की भक्ति के सबसे बड़े आदर्श हनुमान हैं जिनके लिए जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपने स्वामी रामकी सेवा करना है। अपनी इसी अनन्य सेवा के कारण ही वे 'अतुलित बल' के आगार हैं। इसका प्रमाण यह है कि जिस समुद्र को पार करने हेतु राम को पुल बांधना पड़ा। हनुमान अपने सेवक धर्म के बल पर उसी समुद्र को लांघकर चले गए –

''साहब तें सेवक बड़ो जो निज धरम सुजान।
राम बाँधि उतरे उदधि लाँघि गए हनुमान।''[8]

संसार में केवल राम और उनके सेवक ही निःस्वार्थ भाव से उपकार करने वाले हैं –

''हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी।।''[9]

शिव पार्वती से हनुमान की प्रशंसा करते हुए कहते हैं, कि 'हनुमान के समान न तो कोई भाग्यशाली है और ना ही कोई राम के चरणों का प्रेमी है। राम ने स्वयं अपने मुख से हनुमान के प्रेम और सेवा की बार-बार बड़ाई की है।'[10]

बाली अपने जीवन के अंतिम क्षण में राम से विनती करते हुए कहता है, कि मेरे पुत्र अंगद को दास रूप में स्वीकार करें –

---

[7] ''बड़ो गहे ते होत बड़ ज्यों बावन कर दंड।
श्रीप्रभु के संग सों बढ़ो गयो अखिल ब्रह्मंड।।'' *वही,* दो. 532.

[8] *वही,* दो. 528.

[9] श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दो. 46.3

[10] ''हनूमान सम नहिं बड़भागी। नहिं कोउ राम चरन अनुरागी।।
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार-बार प्रभु निज मुख गाई।।'' श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दो. 49.4-5.

''यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिऐ।

गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिऐ।।''[11]

मृत्यु के समय बाली के हृदय में राम के प्रति दास्य भाव की भक्ति जागृत होती है। जिसकी प्रेरणा से बाली पुत्र को राम की सेवा में समर्पित करने की इच्छा प्रकट करता है। भगवान राम तो भाव के भूखे हैं। वे बाली को परम गति प्रदान करते हैं।

''भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन।''[12]

तुलसी राम के संदर्भ में कहते हैं, कि जिस स्वामी की महिमा का बखान सरस्वती, शेषनाग और संतजन करते हों, सामवेद जिनका गुणगान करता हो, शिव जिनके नाम का प्रेमपूर्वक स्मरण करते हों, जो सुख देनेवाले, सुशील, वीर, पवित्र और अनेक कामदेवों के समान सुन्दर हों उस स्वामी की सेवा करनी चाहिए -

''सेइये सुसाहिब राम सो।

सुखद सुसील सुजान सूर सुचि, सुंदर कोटिक काम सो।।

सारद सेस साधु महिमा कहैं, गुनगन-गायक साम सो।

सुमिरि सप्रेम नाम जासों रति चाहत चंद्र-ललाम सो।।''

वस्तुतः तुलसीदास की भक्तिभावना राम के प्रति एकनिष्ट तो है ही शिव के प्रति भी कम नहीं हैं किंतु वे राम के प्रति दास्य भाव की भक्तिभावना रखते हैं। तुलसीदास को शिव

---

[11] श्रीरामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, छं. 2.

[12] श्रीरामचरितमान, उत्तरकाण्ड, सो. 92(ख).

द्रोही पसंद नहीं हैं। राम के प्रति उनकी दासता का भाव विनय पत्रिका हो या मानस सभी जगह देखने को मिल जाता है। राम भक्ति के अनेक कवि हुए किंतु तुलसीदास की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। क्योंकि वे राम की आदर्श छवि प्रस्तुत करने वाले सर्वप्रिय कवि हैं।

---------- • • • ----------